Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

गबन और राष्ट्रीय आंदोलन

Bhawnesh Kumari Sudan[1]* Dr. Sanju Jha[2]

[1] Research Scholar, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

[2] HOD, Department of Hindi, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

सार – ***गबन प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास है ! इस उपन्यास में उन्होंने भारतीय नारी के आभूषण-प्रेम को आधार बनाकर मध्यवर्ग के आर्थिक और सामाजिक अंतरविरोधियों का मनोहारी चित्रण किया है ! रमानाथ जैसा चरित्र प्रेमचंद की गहरी दृष्टि का परिणाम है जो अपनी पत्नी की आभूषण लिप्सा के लिए चोरी करने पर उतर आता है ! गबन करता है और फिर गबन के अपराध से बचने के लिए शहर छोड़कर भागने के लिए मजबूर हो जाता है ! इसी कारण रमानाथ लगातार एक के बाद दूसरी कठिनाइयों में फंसता चला जाता है लेकिन प्रेमचंद का अभिप्राय मात्र रमानाथ की कहानी का नहीं है ! वे इसके मध्यम से व्यवस्था और पोलिसतंत्र के भ्रष्टाचार, क्रूरता और अमानवीयता का चित्रण करते हैं, और बताते हैं कि सारी व्यवस्था भ्रष्टाचार के दलदल में धंस चुकी है ! लोग गलत ढंग से धन कमाने को ही अपनी असली कमाई मानने लगे हैं ! प्रेमचंद अपने इस उपन्यास में राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियों को भी ले आते हैं और इससे अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता को भी अत्यन्त कलात्मक ढंग से व्यक्त करते हैं ! यही कारण ही कि इतने लम्बे अरसे के बाद भी भारतीय मानव में एक महत्वपूर्ण कथा-कृति के रूप में टिका हुआ है !***

----------X----------

भूमिका

गोदान प्रेमचंद का हिंदी उपन्यास है जिसमें उनकी कला अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची है। गोदान में भारतीय किसान का संपूर्ण जीवन - उसकी आकांक्षा और निराशा, उसकी धर्मभीरुता और भारतपरायणता के साथ स्वार्थपरता ओर बैठकबाजी, उसकी बेबसी और निरीहता- का जीता जागता चित्र उपस्थित किया गया है। उसकी गर्दन जिस पैर के नीचे दबी है उसे सहलाता, क्लेश और वेदना को झुठलाता, 'मरजाद' की झूठी भावना पर गर्व करता, ऋणग्रस्तता के अभिशाप में पिसता, तिल तिल शूलों भरे पथ पर आगे बढ़ता, भारतीय समाज का मेरुदंड यह किसान कितना शिथिल और जर्जर हो चुका है, यह गोदान में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है।

नगरों के कोलाहलमय चकाचौंध ने गाँवों की विभूति को कैसे ढँक लिया है, जमींदार, मिल मालिक, पत्रसंपादक, अध्यापक, पेशेवर वकील और डाक्टर, राजनीतिक नेता और राजकर्मचारी जोंक बने कैसे गाँव के इस निरीह किसान का शोषण कर रहे हैं और कैसे गाँव के ही महाजन और पुरोहित उनकी सहायता कर रहे हैं, गोदान में ये सभी तत्व नखदर्पण के समान प्रत्यक्ष हो गए हैं। गोदान, वास्तव में, २०वीं शताब्दी की तीसरी और चौथी दशाब्दियों के भारत का ऐसा सजीव चित्र है, जैसा हमें अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

गोदान में बहुत सी बातें कही गई हैं। जान पड़ता है प्रेमचंद ने अपने संपूर्ण जीवन के व्यंग और विनोद, कसक और वेदना, विद्रोह और वैराग्य, अनुभव और आदर्श् सभी को इसी एक उपन्यास में भर देना चाहा है। कुछ आलाचकों को इसी कारण उसमें अस्तव्यस्तता मिलती है। उसका कथानक शिथिल, अनियंत्रित और स्थान-स्थान पर अति नाटकीय जान पड़ता है। ऊपर से देखने पर है भी ऐसा ही, परंतु सूक्ष्म रूप से देखने पर गोदान में लेखक का अद्भुत उपन्यास-कौशल दिखाई पड़ेगा क्योंकि उन्होंने जितनी बातें कहीं हैं वे सभी समुचित उठान में कहीं गई हैं। प्रेमचंद ने एक स्थान पर लिखा है - 'उपन्यास में आपकी कलम में जितनी शक्ति हो अपना जोर दिखाइए, राजनीति पर तर्क कीजिए, किसी महफिल के वर्णन में १०-२० पृष्ठ लिख डालिए (भाषा सरस होनी चाहिए), कोई दूषण नहीं।' प्रेमचंद ने गोदान में अपनी कलम का पूरा जोर दिखाया है। सभी बातें कहने के लिये उपयुक्त प्रसंगकल्पना, समुचित तर्कजाल और सही मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रवाहशील, चुस्त और दुरुस्त भाषा और वणर्नशैली में उपस्थित कर देना प्रेमचंद

www.ignited.in

का अपना विशेष कौशल है और इस दृष्टि से उनकी तुलना में शायद ही किसी उपन्यास लेखक को रखा जा सकता है।

जिस समय प्रेमचन्द का जन्म हुआ वह युग सामाजिक-धार्मिक रुढ़िवाद से भरा हुआ था। इस रुढ़िवाद से स्वयं प्रेमचन्द भी प्रभावित हुए। जब अपने कथा-साहित्य का सफर शुरु किया अनेकों प्रकार के रुढ़िवाद से ग्रस्त समाज को यथाशक्ति कला के शस्त्र द्वारा मुक्त कराने का संकल्प लिया। अपनी कहानी के बालक के माध्यम से यह घोषणा करते हुए कहा कि "मैं निरर्थक रूढ़ियों और व्यर्थ के बन्धनों का दास नहीं हूँ।"

प्रेमचन्द और शोषण का बहुत पुराना रिश्ता माना जा सकता है। क्योंकि बचपन से ही शोषण के शिकार रहे प्रेमचन्द इससे अच्छी तरह वाकिफ हो गए थे। समाज में सदा वर्गवाद व्याप्त रहा है। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति को किसी न किसी वर्ग से जुड़ना ही होगा।

प्रेमचन्द ने वर्गवाद के खिलाफ लिखने के लिए ही सरकारी पद से त्यागपत्र दे दिया। वह इससे सम्बन्धित बातों को उन्मुख होकर लिखना चाहते थे। उनके मुताबिक वर्तमान युग न तो धर्म का है और न ही मोक्ष का। अर्थ ही इसका प्राण बनता जा रहा है। आवश्यकता के अनुसार अर्थोपार्जन सबके लिए अनिवार्य होता जा रहा है। इसके बिना जिन्दा रहना सर्वथा असंभव है।

वह कहते हैं कि समाज में जिन्दा रहने में जितनी कठिनाइयों का सामना लोग करेंगे उतना ही वहाँ गुनाह होगा। अगर समाज में लोग खुशहाल होंगे तो समाज में अच्छाई ज्यादा होगी और समाज में गुनाह नहीं के बराबर होगा। प्रेमचन्द ने शोषितवर्ग के लोगों को उठाने का हर संभव प्रयास किया। उन्होंने आवाज लगाई "ए लोगों जब तुम्हें संसार में रहना है तो जिन्दों की तरह रहो, मुर्दों की तरह जिन्दा रहने से क्या फायदा।"

गबन और राष्ट्रीय आंदोलन

उपन्यास वे ही उच्च कोटि के समझे जाते हैं जिनमें आदर्श तथा यथार्थ का पूर्ण सामंजस्य हो। 'गोदान' में समान्तर रूप से चलने वाली दोनो कथाएं हैं - एक ग्राम्य कथा और दूसरी नागरी कथा, लेकिन इन दोनो कथाओं में परस्पर सम्बद्धता तथा सन्तुलन पाया जाता है। ये दोनो कथाएं इस उपन्यास की दुर्बलता नहीं वरन, सशक्त विशेषता है।

यदि हमें तत्कालीन समय के भारत वर्ष को समझना है तो हमें निश्चित रूप से गोदान को पढना चाहिए इसमें देश-काल की परिस्थितियों का सटीक वर्णन किया गया है। कथा नायक **हरी** की वेदना पाठको के मन में गहरी संवेदना भर देती है। संयुक्त परिवार के विघटन की पीड़ा होरी को तोड़ देती है परन्तु गोदान की इच्छा उसे जीवित रखती है और वह यह इच्छा मन में लिए ही वह इस दुनिया से कूच कर जाता है।

गोदान औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत किसान का महाजनी व्यवस्था में चलने वाले निरंतर शोषण तथा उससे उत्पन्न संत्रास की कथा है। गोदान का नायक होरी एक किसान है जो किसान वर्ग के प्रतिनिधि के तौर पर मौजूद है। '**आजीवन दुर्धर्ष संघर्ष के बावजूद उसकी एक गाय की आकांक्षा पूर्ण नहीं हो पाती**'। गोदान भारतीय कृषक जीवन के संत्रासमय संघर्ष की कहानी है।

'गोदान' होरी की कहानी है, उस होरी की जो जीवन भर मेहनत करता है, अनेक कष्ट सहता है, केवल इसलिए कि उसकी मर्यादा की रक्षा हो सके और इसीलिए वह दूसरों को प्रसन्न रखने का प्रयास भी करता है, किंतु उसे इसका फल नहीं मिलता और अंत में मजबूर होना पड़ता है, फिर भी अपनी मर्यादा नहीं बचा पाता। परिणामतः वह जप-तप के अपने जीवन को ही होम कर देता है। यह होरी की कहानी नहीं, उस काल के हर भारतीय किसान की आत्मकथा है। और इसके साथ जुड़ी है शहर की प्रासंगिक कहानी। 'गोदान' में उन्होंने ग्राम और शहर की दो कथाओं का इतना यथार्थ रूप और संतुलित मिश्रण प्रस्तुत किया है। दोनों की कथाओं का संगठन इतनी कुशलता से हुआ है कि उसमें प्रवाह आद्योपांत बना रहता है। प्रेमचंद की कलम की यही विशेषता है।

इस रचना में प्रेमचन्द का गांधीवाद से मोहभंग साफ-साफ दिखाई पड़ता है। प्रेमचन्द के पूर्व के उपन्यासों में जहॉ आदर्शवाद दिखाई पड़ता है, गोदान में आकर यथार्थवाद नग्न रूप में परिलक्षित होता है। कई समालोचकों ने इसे महाकाव्यात्मक उपन्यास का दर्जा भी दिया है।

उपन्यास को पढ़ने के बाद पता लगा कि उपन्यास के मुख्य भाग में इन्ही सब बातों पर बात की गई है। उसमे होरी कि स्थिती कि बात कि गई है, अच्छी है या दयनीय है, वह कितने सारे दुषमनों से घिरा हुआ है और उसके अपने उसका कैसे साथ निभाते हैं। उपन्यास का यह भाग ऐसा है जिसे पढ़ने के बाद समझ में आता है कि इसमे लेखक ने दखल दिया है क्यों कि कथा स्वाभाविक नहीं चलती है, सब पहले से तय है ऐसा प्रतीत होता है। मगर एक खुबसूरत बात यह है कि कहानी अपने से जोड़ने काम बखूबी करती है, एक बार शुरू करने के बाद इसे खत्म किये बिना छोड़ देना मुश्किल है।

इस भाग में जो गौर करने वाली बात है, वह है पात्रों की रूप-रेखा की जो लाजवाब है। पात्रों के बारे में पढ़ने के बाद मन में

www.ignited.in

अपने आप ही उसकी एक छवि बनने लगती है। अपनी बेहतरीन लेखन शैली से लेखक ने हर एक पात्र को एक अनोखा रूप दिया है। जहा तक मुझे लगता है अगर आज भी लोग इस पुस्तक को पढ़ना इतना पसंद कर रहे है तो उसका कारण यही है, कहानी के पात्रों में खुद को लोग देख पाते हैं। कहानी में जो अगला सबसे महत्वपूर्ण पात्र है, वह है रायसाहब का, जो कि एक जमीन्दार हैं।

इस पात्र की कहानी को समझने के लिए हमे तब के देश काल कि बात करनी बात करनी होगी जब यह उपन्यास लिखा गया था। उस समय देश अंग्रेज़ो का गुलाम था, और किसान जमीन्दारों के गुलाम थे। उस समय जमीन्दार जितने भी थे देश में, सब अंग्रेज़ो की कठपुतली थे जिनका पतन होना तय था। ऐसा बताया गया है इस पुस्तक में और हुआ भी ऐसा ही सब जानते है भारत के आज़ाद होते ही जमीन्दारी धीरे-धीरे खत्म हो गई। रायसाहब का भी पतन ही दिखाया गया है उपन्यास में उनकी इच्छाएँ पूरी हो कर भी पूरी नहीं होती है, उसमे विघ्न आ जाती है, यह पात्र महत्वपूर्ण इस लिए है क्यों कि इस पात्र कि कहानी से समझ आता है कि लेखक यह पहले ही समझ गया था कि इस वर्ग का कोई भविष्य नहीं है इनका सिर्फ पतन होगा।

कहानी में कई ऐसें भी पात्र है जिनके चरित्र को खुला छोड़ा गया है क्यों कि उसको लेकर शायद लेखक ही अस्पष्ट नहीं था। मगर वही कुछ पात्र को लेकर लेखक एकदम अस्पष्ट है। इसलिए उसके चरित्र को अंतिम तक बताया है और वह सभी पात्र आज हमारे आस-पास ही हैं, ऐसा लगता है, इस तरह से विवरण किया है लेखक ने उन पात्रों का, जो सचमुच में अद्भुत हैं।

कहानी में एक समय ही कई घटनाएँ घटती है लेकिन उपन्यास के नायक या खलनायक के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आता हैं। क्यों कि उनका चरित्र नहीं बदलता है, चाहे जीवन में जो भी परिस्थिती आ जाए उनका चरित्र अटल रहता है। मगर अब यह सवाल उठता है कि इतने सारे सह-प्रयोजन कथानक होने के बावजूद यह उपन्यास इतना अच्छा कैसे बन गया।

इसका जवाब है, जिन पात्रों को लेखक ने अंतिम शक्ल दी है, केवल उन्ही पात्रों से उपन्यास का अर्थ निकलता है बाकी सब तो कहानी में यू ही है। जो आते है और जाते है मगर हमारा ध्यान नहीं खिंच पाते है या यु कहे कि कहानी के असली नायक और खलनायक कि कहानी ऐसी है जिसकी वजह से हमारा ध्यान इन पर नहीं जा पाता है।

लेखक ने अपने विचारों को इस उपन्यास में पात्र का रूप दिया है। होरी और रायसाहब जैसे पात्र हमसे कुछ कहना चाहते है, हमे कुछ समझाना चाहते है, कहानी में पाए गए अपने चरित्र से अपने स्वभाव से हमे कुछ सिखाना चाहते है। इस भाव को प्रकट करने में लेखक सफल रहे है। लेखक ने इस उपन्यास में जो समस्याएं और अपने विचार कि अभिवयक्ति की है, वह ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं हैं।

उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है उन मानव प्रतिमाओ का निर्माण, मानव चरित्र का निर्माण। मुंशी प्रेमचंद ने कहानी में अनेको मनुस्य का चित्रण किया है और सब का चित्रण अनोखा है। यही सब बातें इस उपन्यास को श्रेष्ठ बनाती है और लेखक को भी।

मचन्द क्रमश: विकसित होने वाली प्रतिभा वे+ रचनाकार थे। इसीलिए उनकी उपन्यासकला क्रमश: विकसित होती हुई उनवे+ अंतिम पूर्ण उपन्यास 'गोदान (1936) में अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची और उनवे+ इस उपन्यास को एक कालजयी वृ+ति (क्लैसिक) का सम्मान मिला। नलिन विलोचन शर्मा ने हिंदी वे+ जिन दस श्रेष्ठ उपन्यासों की सूची बनायी थी, उसमें उन्होंने 'गोदान को सबसे ऊपर रखा था। 'मैला आँचल पर आलोचनात्मक लेख लिखते हुए उन्होंने लिखा था कि वे बिना किसी संकोच वे+ उन दस उपन्यासों में से किसी एक उपन्यास को हटाकर उसवे+ स्थान पर इसे रख सकता हूँ। अपनी आर्थिक कठिनाइयों और कर्ज से मुकित पाने के लिए वे मुंबई गये। वहीं फिल्मी माया नगरी में बैठकर उन्होंने 'गोदान की रचना की। लेकिन वे वहाँ रम नहीं पाये। उन्होंने वहीं से जैनेन्द्र को एक पत्रा लिखा था |

कर्जदार हो गया था, कर्ज पटा दूँगा, मगर और कोई लाभ नहीं। उपन्यास 'गोदान वे+ अंतिम पृष्ठ लिखने बाकी हैं। उधर मन नहीं जाता। (जी चाहता है) यहाँ से छुटटी पाकर अपने पुराने अडडे पर जा बैठूँ। वहाँ धन नहीं है, मगर संतोष अवश्य है। यहाँ तो जान पड़ता है कि जीवन नष्ट कर रहा हूँ। ('हंस, मई, 1939 पृष्ठ 900) अपनी मृत्यु (8 अक्टूबर, 1936) से तीन महीने पहले उपेन्द्रनाथ 'अश्क को लिखे हुए पत्रा में उन्होंने आकांक्षा व्यक्त की थी, भाई, मनुष्य का बस हो तो कहीं देहात में जा बसे, दो-चार जानवर पाल ले और जीवन को देहातियों की सेवा में व्यतीत कर दे। (हंस, मई, 1939, पृष्ठ 810) मुंबई मे मन न लगने और कहीं देहात में जा बसने की उनकी आकांक्षा ग्रामीण संस्कार हैं।

मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि किशोरावस्था में मनुष्य के जो संस्कार बन जाते हैं, उनसे वह जीवन-भर मुक्त नहीं हो पाता। प्रेमचन्द्र भी गाषँव में जन्में थे; वहीं संस्कार निर्मित हुए थे। इसीलिए चाहे वे बनारस, लखनऊ या मुंबई में भले ही रहे हों, लेकिन गाँव के प्रति अपनी ललक से कभी मुक्त नहीं हो पाये। गाँव में जन्मने और वहीं संस्कार आर्जित करने के कारण उनकी प्रवृत्ति अन्तमर्खी न होकर बहिमर्खी थी। इस सबका प्रभाव उनके रचना कर्म पर भी पड़ा। शहर में जन्मने वाला और

www.ignited.in

अन्तमर्ुखी प्रवृत्ति वाला कोई उपन्यासकार 'गोदान जैसा उपन्यास कभी नहीं लिख सकता था। यही कारण है कि 'गोदान की केन्द्रीय कथा गाँव की है और सहयोगी कथा शहर की।

सन्दर्भ

शर्मा, रामविलास (२०१३), written at नई दिल्ली, भारत, *प्रेमचंद और उनका युग*, राजकमल प्रकाशन।

गोपाल, मदन (२०१२), written at नई दिल्ली, भारत, *प्रेमचंद की आत्मकथा*, प्रभात प्रकाशन, आई॰ ऍस॰ बी॰ ऍन॰ 8173153140।

राय, अमृत (२०१०), written at दिल्ली, भारत, *कलम का सिपाही*, साहित्य अकादमी, आई॰ ऍस॰ बी॰ ऍन॰ 8172010141।

प्रेमचंद (२०१३), written at दिल्ली, भारत, *प्रेमचंद की ७५ लोकप्रिय कहानियाँ*, राजा प्रकाशन, आई॰ ऍस॰ बी॰ ऍन॰ 8176046663।

फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश, पृ. 304.

एस पोपोव, मानवतावाद और समाजवाद, पृ. 5.

हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 369-70.

प्रेमचन्द समग्र - सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी, पृ. 85.

गबन, पृ. 86

Corresponding Author

Bhawnesh Kumari Sudan*

Research Scholar, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

www.ignited.in